International Journal of Arts & Education Research

पूर्व माध्यमिक स्तर की सामाजिक अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों का मानकों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

शशिबाला*[1], डॉ0 ऋतु भारद्वाज[2]

[1]शोधार्थी, सिंघानिया विश्वविद्यालय, झूंझनू, राजस्थान।

[2]निर्देशिका, प्राचार्या एस्ट्रॉन कॉलिज ऑफ एजूकेशन, मेरठ।

किसी सभ्य समाज के लिये शिक्षा प्राण हैं तथा जीवन मूल्य उसकी आत्मा। मूल्य-शिक्षा के नीति-निर्देशक तत्व है, ये मानव के व्यवहार को नियंत्रित और निर्देर्शित करते हैं। मूल्य-विहीन शिक्षा निरर्थक एव निर्जीव समझी जाती है। हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा की सेंरचना मूल्यों पर आधारित होती है। शिक्षा स्वय में सबसे बड़ा मूल्य है। इसका प्रभाव व्यक्ति के ऊपर बहुत गहरा पड़ता है। मूल्य के आधार पर ही मनुष्य अपने जीवन दृष्टिकोण को बनाता है। मूल्य ही मानव जीवन को अर्थ, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते है।

शिक्षण एक मूल्य अभिमुख कार्य है तथा मूल्यों के शिक्षण से बचना अशोभनीय है। मूल्यों की शिक्षा में विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। मूल्यों के शिक्षण की अभिव्यक्ति न केवल पाठ्यक्रम वरन विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के मध्य की अन्तःक्रियाओं में भी होती है।

IJAER